

B.A (Hons) Part-2

Philosophy - Paper - 3

Topic - नीतिशास्त्र में ऐच्छिक कर्म का विश्लेषण

Dr. Sachidamand Prasad.

R.R.S. College, MOKAMA.

(1)

नीतिशास्त्र में ऐच्छिक कर्म की परिभाषा
दोहर कहा गया है कि जब कोई आत्मचेतन
पुरुष अपनी स्वतंत्र इच्छा से संकल्प करके
कोई ऐसा कर्म करता हो, जिसके साधन
और हेतु का उसे पूर्व ज्ञान हो तो उस
क्रिया को ऐच्छिक कर्म कहते हैं। उदाहरण
के लिए क्लास में पढ़ाई होने वक्त किसी
विद्यार्थी को ध्यास लग जाती है और वह
दुविधा में पड़ जाता है कि शिक्षक से
आज्ञा लेकर पानी पी ओं या क्लास
समाप्त होने के बाद ही पानी पीने जायें।
अंत में वह विद्यार्थी यह विचार करता
है कि शिक्षक की आज्ञा लेकर पानी
पीने जा रहा हूँ। अंत में वह क्लास
से बाहर शिक्षक की आज्ञा लेकर जाता
है और पानी पीकर पुनः क्लास में
लौट आता है। विद्यार्थी के इस कर्म
को ऐच्छिक कर्म कहा जाएगा क्योंकि
वह एक आत्मचेतन और स्वतंत्र है। इसलिए
यह कहा जा सकता है कि किसी भी
ऐच्छिक कर्म में तीन स्तर होते हैं।

(1) मानसिक स्तर (2) शारीरिक स्तर

(3) बाह्य स्तर।

(1) (A) मानसिक स्तर :- नीतिशास्त्र में यह बताया गया है कि प्रत्येक ऐच्छिक कर्म के पीछे कोई प्रेरणा होती है और उस प्रेरणा का कारण कोई अभाव होता है। जब मनुष्य में किसी चीज का अभाव होता है तो उसकी पूर्ति के लिए कर्म करता है।

(B) लक्ष्य और प्रयोजन :- जब मनुष्य को किसी प्रकार के अभाव की चेतना होती है तो उसके सामने ऐसी वस्तु का विचार आता है जिससे वह समाप्त हो सके कि उससे उसका अभाव दूर हो जायेगा। इस प्रकार उस वस्तु को ही जिससे हम समझते हैं कि हमारा अभाव दूर हो जायेगा। क्रिया का लक्ष्य कहते हैं और उस वस्तु के विचार को प्रयोजन कहते हैं।

(C) इच्छा :- उस वस्तु की प्राप्ति के लिए जिससे हम समझते हैं कि हमारे अभाव की पूर्ति हो जायेगी जो हमारे अन्दर उत्पन्न होती है उसे इच्छा कहते हैं। जिस समय हमारे कोई इच्छा होती है यदि



Page No:

Date: .../.../...

उस समय कोई विरोधात्मक इच्छा नहीं होती तो हम तुरंत किसी निष्पक्ष पर पहुँचकर कर्म कर लेते हैं लेकिन यदि उसी समय विरोधात्मक इच्छाएँ आ जायें तो एक द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है।

(६) इच्छा या प्रयोजन का संघर्ष या मानसिक द्वन्द्व :- कभी-कभी अनेक विरोधी प्रवृत्तियाँ हमारे सामने आती हैं, इससे अनेक इच्छाएँ, लक्ष्य और प्रयोजन सामने आ जाते हैं। ऐसी स्थिति में हमलोग यह सोचने लगते हैं कि इनमें किस इच्छा की पूर्ति की जाये। सभी इच्छाओं की पूर्ति एक ही समय में संभव नहीं है क्योंकि इच्छाएँ विरोधी हैं। ऐसी स्थिति में उनमें संघर्ष उत्पन्न होता है जिसे मानसिक द्वन्द्व की अवस्था कहते हैं।

(७) विचारण :- जब इच्छाओं में द्वन्द्व उत्पन्न होता है तो हमारा मन कार्य को स्थगित करके विचारने लगता है कि निष्पक्ष इच्छाओं की पूर्ति में कौन-कौन से गुण-दोष हैं। और निम्न विकल्पों की मन में तुलना करता है।

इस क्रिया को मानसिक विचारना कहते हैं। (4)

(1) युगाव या निर्णय: - जब हमारे मन विभिन्न इच्छाओं द्वारा प्रेरित कर्तों के गुण-दोषों का चिन्ता करने लगता है तो उनमें से किसी एक इच्छा को चुन लेता है जिसे युगाव या निर्णय कहा जाता है।

(2) निश्चय या संकल्प: - जब लक्ष्य और साधन का निर्णय किया जाता है तो हम लोग संकल्प कर लेते हैं। कभी कभी अपने निर्णय को ठोस कार्यरूप दिया जाता है लेकिन कभी कभी हम निश्चय कर लेते हैं कि हम अपने निर्णय पर अड़े रहेंगे। यहाँ निश्चय पूर्वक निर्णय पर अड़े रहने का और द्विविधा को दूर करने का संकल्प होता है।

(3) शारीरिक क्रिया: - नीतिशास्त्र में बताया गया है कि संकल्प कर लेने के बाद शारीरिक अथवा गतिशील हो जाता है।

(5)

- (3) वाध्य परिणाम :- नीतिशास्त्र में बताया गया है कि शारीरिक गति के कारण वाध्य जगत में कुछ परिवर्तन होता है जिसे हम लोग 'परिणाम' कहते हैं। यदि हमारा कर्म सफल हुआ तो उसका परिणाम भी वैसा ही होता है जैसा हमारा 'अभिप्राय' या 'सफल कर्म' के परिणाम में निम्नलिखित बातें होती हैं।
- (iv) चुने हुए उद्देश्य की सिद्धि जिसके लिए कर्म किया गया है।
- (v) चुने हुए उचित या अशुचित साधन की सिद्धि।
- (vi) कुछ प्रत्याशित और कुछ अप्रत्याशित परिणाम।